पाठ- 9
हमें न बाँधों प्राचीरों में

● शिवमंगल सिंह 'सुमन'

आइए, सीखें : प्रकृति सौन्दर्य से परिचय। ♦ प्राणी मात्र की स्वतंत्र रहने की भावना का ज्ञान। ♦ स्त्रीलिंग, पुल्लिंग शब्दों का बोध ।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगें।

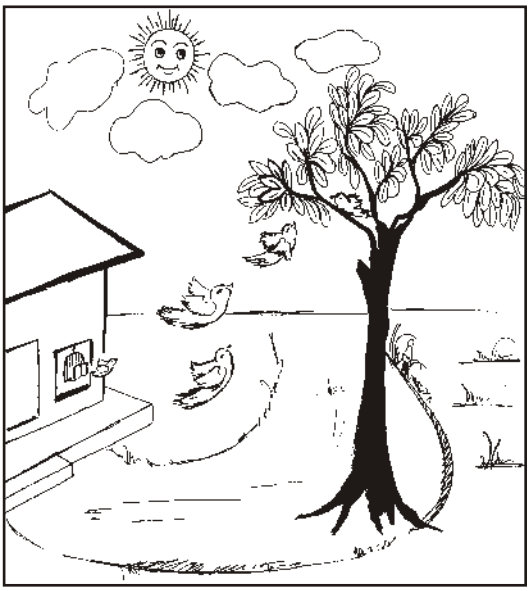

हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक-निबोरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति,उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरू की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि होती
नील-गगन से होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता,
या तनती साँसों की डोरी,

नीड़ न दो,चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,

शिक्षण संकेत -

♦ कविता को हाव-भाव व लय के साथ प्रस्तुत करें। ♦ पक्षियों व प्राकृतिक सौन्दर्य की चर्चा करें। ♦ मिलते-जुलते हाव-भाव वाली कविता सुनाएँ अथवा बच्चों को सुनाने हेतु कहें। ♦ 'स्वाधीनता का सुख' व 'सोने के पिंजरे का दु:ख' बच्चों को बताएँ ।

लेकिन पंख दिये हैं, तो
आकुल उड़ान में विध्न न डालो।

नए शब्द–

उन्मुक्त = स्वतंत्र। **गगन** = आकाश। **पिंजरबद्ध** = पिंजरे में बंद। **कनक** = सोना। **पुलकित** = प्रसन्न। **कटुक** = कड़ुआ,कड़वा । **शृंखला** = जंजीर। **फुनगी** = अंतिम सिरा। **अरमान** = इच्छा। **क्षितिज** = वह स्थान जहाँ पृथ्वी एवं आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं। **नीड़** = घोंसला। **टहनी** = पतली शाखा । **आश्रय** = सहारा। **आकुल** = बेचैन। **प्राचीर** = परकोटा,चार दीवारी ।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(क) सही जोड़ी बनाइए–

ऐसे थे अरमान कि होती	–	पुलकित पंख टूट जाएँगे
कनक तीलियों से टकराकर	–	नील गगन से होड़ा–होड़ी
हम बहता जल पीने वाले	–	तरू की फुनगी पर के झूले
बस सपनों मे देख रहे हैं	–	मर जाएँगे भूखे प्यासे

(ख) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

हम पंछी उन्मुक्त..... के (गगन, चमन)
नीड़ न दो चाहे ..... का (डाली, टहनी)
आश्रय ..... कर डालो (छिन्न–भिन्न, तहस–नहस)
या तो ..... मिलन बन जाता (आकाश, क्षितिज)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) पिंजरे में बंद होकर पक्षी क्यों नहीं गा पाएँगे?
(ब) पंछी क्या चाहता है?
(स) पंछी का क्या अरमान है?
(द) पंछी स्वप्न में क्या देखता है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) पक्षी को सोने की सलाखों के पिंजरे में किस बात का भय बना रहता है और क्यों?

(ब) स्वतंत्र जीवन जीने वाले कैसे होते हैं?

(स) 'कनक-कटोरी की मैदा' और 'कटुक-निबोरी' में से पक्षी को कौन सी वस्तु भली लगती है और क्यों? लिखिए।

(द) पिंजरे की सुविधाएँ पंछी को क्यों पसन्द नहीं हैं?

भाषा की बात-

1. निम्नलिखित शब्दों को बोलिए और लिखिए

उन्मुक्त , पिंजरबद्ध, कटुक-निबोरी, शृंखला, फुनगी, नीड़, आश्रय, नील-गगन, क्षितिज

2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) पुलकित पंख टूट जाएँगे

(ख) स्वर्ण-शृंखला के बंधन में,अपनी गति,उड़ान सब भूले

(ग) नील-गगन से होड़ा-होड़ी

3. कविता में 'नील-गगन' शब्द आया है। इसमें योजक चिह्न (-) का प्रयोग हुआ है।

निम्नलिखित शब्दों को योजक चिह्न लगाकर लिखिए-

कनक तीलियों, भूखे प्यासे, कटुकनिबोरी, कनक कटोरी, होड़ा होड़ी, भिन्न भिन्न

■ ध्यान दीजिए-

भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है। तालाबों की यह नगरी देश के मध्य भाग में तथा विश्व विख्यात बौद्ध स्तूप साँची के समीप होने के कारण देश-विदेश में प्रसिद्ध है। यहाँ गाँव शहर की संस्कृति की मिली-जुली झलक दिखाई देती है। शहर के सभी साक्षर-निरक्षर लोग आपस के राग-द्वेष को त्याग कर दिन-रात प्रेम से मिल-जुल कर यहाँ रहते है और ''अनेकता में एकता'' का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

रेखाकिंत शब्दों को ध्यान से पढ़िए एवं समझिए-

विलोम शब्द

देश	-	विदेश
साक्षर	-	निरक्षर
राग	-	द्वेष
रात	-	दिन

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(1) आकाश – .....

(2) स्वाधीन – .....

(3) सुबह – .....

(4) अमृत – .....

■ यह भी जानिए -

एक दिन राजा और रानी उद्यान में गए। वहाँ उन्होंने पंडित जी को बुलाया। तभी पंडिताइन भी पीछे-पीछे आ गई। उनके हाथ में डिब्बा था और एक डिबिया भी थी। वह अपनी स्वामिनी (रानी) को यह भेंट देकर स्वामी राजा से दक्षिणा लेना चाहती थी।

ऊपर लिखे अनुच्छेद में रेखांकित शब्दों में पुल्लिंग शब्द हैं - राजा, पंडित, डिब्बा, स्वामी इन शब्दों स्त्रीलिंग शब्द हैं - रानी, पंडिताइन, डिबिया, स्वामिनी।

5. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए-

चूहा – .....

बालक – .....

सेवक – .....

पापी – .....

बंदर – .....

घोड़ा – .....

लेखक – .....

अब करने की बारी

- स्वतंत्रता दिवस के आयोजनों में अपनी कविता, कहानी, लेख रचकर प्रतियोगिता में भाग लीजिए।
- राष्ट्रप्रेम की अन्य रचनाएँ खोजकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
- ''हम पंछी उन्मुक्त गगन के'' विषय पर चित्र बनाइए ।